भारतीय समकालीन कला में मूतिकला का योगदानः एक अध्ययन

मातृमणि
शोधार्थी
मेरठ कॉलिज, मेरठ
ईमेलः thiraniya35@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

मातृमणि

भारतीय समकालीन कला में मूर्तिकला का योगदानः एक अध्ययन

Artistic Narration 2022,
Vol. XIII, No. 2,
Article No. 19 pp. 126-131

https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-2022-vol-xiii-no2

सारांश

एक आदर्श नारी में जो गुण होने चाहिए, वे सभी गुण भारतीय नारी में प्रायः मिल जाते हैं। नारी श्रद्धा, सात्विकता, प्रेम, करुणा, दया की मूर्ति है। नारी आज ''अबला नहीं सबला है।'' इस कथन को चरितार्थ करते हुए नारी सफलता के नये आयाम छू रही है। आज नारी के जीवन के हर क्षेत्र में चाहे वह सामाजिक हो, राजनीतिक हो, आर्थिक हो हर जगह वह पुरूष से कदम मिला कर चल रही है और अपनी उपस्थिति का अहसास करा रही है।

मुख्य बिन्दु

नारी, पाठशाला, व्यक्तित्व, बहुआयामी।

नारी की सर्जना करने वाले ब्रह्मा जी ने भी आज की नारी की सुदृढ़ सामाजिक स्थिति, बहुआयामी व्यक्तित्व की प्रतिमा को बिखेरती नारी के वर्तमान स्वरूप को देखकर कभी यह सोचा भी न होगा कि इस पुरूष प्रधानसमाज में नारी इतनी उन्नति कर पाएगी या अपना स्थान सुनिश्चित कर पुरूषों से चार कदम आगे निकल जाएगी। किन्तु वर्तमान में यही सत्य है, क्योंकि वर्तमान युग कलयुग है, अर्थात् ''मशीन युग''। इस मशीन युग में एक ओर जहाँ नारी के उत्तरदायित्व बढ़े, वहीं दूसरी ओर इसने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी प्रतिमा का लोहा मनवाकर ख्याति प्राप्त की।''

वैदिक काल से ही नारी शिक्षा की ओर पर्याप्त जागरूकता थी और शिक्षित नारी को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। उस समय की अनेक विदुशी नारियों का उल्लेख तो आज भी मिलता है। जैसे–मैत्रेयी, गार्गी, अरूंधति, शतरूपा आदि इसके पश्चात् मध्यकाल में नारी शिक्षा की ओर समाज का ध्यान हट गया। इसका मूल कारण यह था कि उस समय देश में अनेक आक्रमण होते रहे। जिससे समाज में पर्दाप्रथा बढ़ी और स्त्रियों की स्थिति अति सोचनीय हो गयी। इसका व्यापक प्रभाव नारी शिक्षा पर भी पड़ा। यही कारण था कि उस समय नारी शिक्षा पिछड़ गयी।

यह ठीक ही कहा गया है कि–Give us good women, we"ll have a great nation.

इस प्रकार ''यत्र नार्युस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' से अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आंचल में है, दूध आंखों में है पानी। तब से लेकर आज तक नारी ने एक लम्बी यात्रा तय की है। 19वी, 20वीं शताब्दी में भारतीय समाज में नारी शिक्षा की कोई सरकारी तथा सार्वजनिक व्यवस्था नहीं थी। तत्कालीन समाज में स्त्री शिक्षा की निम्न स्थिति व उसके परिणाम को स्पष्ट करते हुए स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था कि ''जब तक महिलाओं ाकी स्थिति में सुधार नहीं होगा, तब तक विश्व का कल्याण नहीं हो सकता। किसी भी पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना सम्भव नहीं है।'' आज हम लोग स्त्रियों की भूमिका में क्रान्ति करना चाहते हैं। आधुनिक शिक्षण शास्त्र का यह एक महनीय प्रमेय है कि गुरु के नाते स्त्री, पुरूषों से हजार गुना श्रेष्ठ है, इसका प्रत्यक्ष प्रयोग हमें प्रगतिशील राष्ट्रों में दिखाई पड़ता है। क्रान्तिकारी राष्ट्रों में अग्रगण्य माने जाने वाले रूस में शिक्षक की अपेक्षा शिक्षिका की योग्यता अधिक मानी जाती है।

आज महिलाएँ शिक्षा प्राप्त कर रही हैं, राजनीति में जा रही हैं, काम करने लगी हैं, जिससे उनकी सामाजिक स्थिति पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। ''अभी पिछले दिनांक (2004 पूर्वाध) राजधानी दिल्ली में ''महिलाएँ और मीडिया'' विषय पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें देश भर की मीडिया से जुडत्री लेखिकाओं, पत्रकारों व समाज सेविओं ने भाग लिया। सम्मेलन में कहा गया कि महिलाओं से जुड़े अनेक मुद्दों व समस्याओं को मिडिया के द्वारा अनावृत्त किया जा रहा है और इस पावन यज्ञ में महिला मीडिया कर्मियों का मुख्य योगदान है। मीडिया के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी ने समाज को एक नई दिशा दी है।''

मातृमणि

विक्टर हूगो ने कहा है कि–''मनुष्य में दृष्टि होती है और नारी में दिव्य दृष्टि।'' कई युगपुरूषा हुए हैं, जो नारी के किसी न किसी रूप में चाहे वह माँ, बहन, पत्नी, भाभी अथवा दाई रही हो, से प्रभावित होकर महान बने। अतः कहा जा सकता है कि युग चाहे जो भी रहा हो, संसार की तरक्की नारी के विकास पर ही आधारित है।''

भार्या अर्थात् पत्नी से पुरुष पूर्ण बनता है, उसकी अर्धांगिनी वह इसलिए कहलाती है। वह उसकी सर्वश्रेष्ठ मित्र है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पदार्थ कहलाते हैं, पुरुषार्थ! पुरु होने के मायने हैं इन पदार्थों को साधे। पत्नी अर्थात् भार्या इसकी मूलाधार है।'' इसी तरह ''त्रिया चरित्र पुरुषस्य भाग्यं देवों न जानाति कुतो मनुष्यः'' जैसी आधारहीन मान्यताओं ने नारी के प्रति अविश्वास को जन्म दिया जिससे नारी में हीन भावना व असुरक्षा की भावना का विकास हुआ और उसका आत्म विश्वास डगमगा दिया। इस प्रकार जब तक नारी अपनी कमजोरियों से मुक्ति नहीं पायेगी वह अपने बंधनों से छुटकारा नहीं पा सकती। वर्तमान समय में नारी एक समर्थ व्यक्तित्व के रूप में उभरी है और समाज में नये आयामों को साथ लेकर सफलता का परचम लहरा रहीं है। नारी शिक्षा ही एक मात्र ऐसा आधार है, जो नारी में जागरूकता, आत्मसम्मान आत्मनिर्भरता आदि गुणों का विकास कर सकती है। शिक्षा विहीन प्रशिक्षण नारी व राष्ट्र के विकास में बाधक है।'' समस्त भारत की नारी समाज को आज इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि नारी शिक्ष विकास आन्दालन के प्रेरणता एक नारी ही थी। सावित्री बाई फूले एक पिछड़ी जाति की महिला थी। उन्होंने अपने पति ज्योति राव फूले के साथि कन्धे से कन्धा मिलाकर जीवनपर्यन्त नारी समाज की तन मन सेवा सुश्रूसा की। उन्होंने जनवरी 1747 में समस्त भारत में पहली बार प्रथम कन्या पाठशाला का शुभारम्भ किया। नेहरू जी के अनुसार यदि विकास करना है तो महिलाओं को आगे करना होगा, महिलाओं का विकास होने पर समाज का विकास स्वतः ही हो जायेगा। आज के समय में महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन हुआ है उनकी स्थिति पहले से बेहतर है, परन्तु ये परिवर्तन केवल शहरी क्षेत्र की महिलाओं में है, ग्रामीण क्षेत्र की महिलाऐं आज भी इसी परेशानी व दंश को झेल रही हैं। अशिक्षित महिला देश के विकास में सहयोग नहीं दे सकती। गांधी जी ने महिला शिक्षा के लिए कहा कि ''अगर पुरुष शिक्षित होता है तो वह केवल व्यक्तिगत जीवन के लिए सुरक्षित होता है, लेकिन महिला शिक्षित है तो पूरा परिवार शिक्षित माना जाता है।'' नारी को तर्कशील वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना होगा। अधिकारों के साथ जिम्मेदारी भी उठानी होगी।

अगर वाकई में महिलाओं को आगे बढ़ना है, तो उन्हें अपना हक लेना होगा जरूरत है कि महिलाऐं शिक्षित व जागरूक बनें। महिलाऐं अगर अपने हाथ में किताबे पकड़ लें तो उन्हें राजनैतिक अधिकार देने नहीं पड़ेगी। वे स्वयं छीन लेंगी न कि अपने अधिकारों का हनन बर्दाश्त करेगी। शिक्षित व जागरूक महिला राजनीति क्षेत्र में स्वतंत्र निर्णय लेगी और अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए नये रास्ते और आयाम स्थापित करेगी। शिक्षित महिलाऐं आर्थिक रूप से भी

आत्मनिर्भर बनेगी। शिक्षित महिलाऐं विकास की दौड़ में पीछे नहीं होंगी इसलिए जरूरत है महिलाओं को शिक्षित और जागरूक बनाने की।

''गांधी जी ने कहा है कि दक्षिणी अफ्रीका के सत्याग्रह आन्दोलन में स्त्रियों की सहभागिता ने उन्हें (गांधी को) महिलाओं की आत्म बलिदानी एवं कष्ट सहन करने की असाधारण क्षमताओं का अहसास कराये जाने वाले वर्षों में गांधी जी ने महिलाओं के अनिवार्य रूप से आत्मबलिदानी स्वभाव को एक सिद्धांत के रूप में प्रतिपादित किा जो कि नैतिक सिद्धांतों के आधार पर अहिंसक युद्ध के लिए सर्वाधिक उपयुक्त था।''

''स्त्री अगर आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी हो तो उस पर जुल्म नहीं होंगे। स्वावलम्बी होने से औरत का स्वाभिमान बढ़ता है और उसका आत्मसम्मान भी। साथ ही वह प्रतिकूल परिस्थितियों और प्रतिबन्धों को नकारने की क्षमता हासिल कर लेती है।'' वर्तमान समय में महिलाओं ने अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति, समर्थता, रचनात्मकता व कार्य कुशलता के दम पर अपना स्थान समाज में स्थापित किया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री की उपलब्धियों में भारतीय संस्कृति का एक प्रज्जवल रूप दिखाई देता है। अतः किसी कवि के द्वारा यह ठीक ही कहा गया है कि–

लम्बी सदियों के शोषण से संघर्ष कर खुद को उबारा है।
बहुआयामी निधियों से समाज का रूप दिखारा है।
नवीन प्रकाशन की ज्योति देकर समाज को नया मोड़ दिया
हौसला, कर्मठता, ह्रदय में भरकर नव शक्ति को नया भोर दिया।

किसी भी समुदाय की बात की जाए तो नारी शिक्षा को हमेशा से उपेक्षित भाव से देखा जाता रहा है। नारी की शिक्षा के विषय में अनेक मत प्रचलित हैं। पुरूष अपने अहंकार वश नारी एवं नारी शिक्षा के प्रति हमेशा से पूर्वाग्रहित रहा है। वह नारी बुद्धि एवं शक्ति में किसी पुरूष से कम नहीं है। उसमें पुरूषों से कहीं ज्यादा उत्तम शक्ति है जो उसे किसी भी प्रकार की शिक्षा प्रापत करने का अधिकार प्रदान करती है। मनु ने तो यहाँ तक कहा है कि माता–पिता का कर्तव्य है कि विवाह से पूर्व में बालिका को स्वांग शिक्षा अवश्य दें। ललित कला की शिक्षा उन्हें अवश्य मिलनी चाहिए।

हमारे स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं ने देश की उन्नति एवं विकास को जारी रखने के लिये शिक्षा के महत्व को समझ लिया था। साि ही उन्होंने स्त्री शिक्षा के महत्व को भी समझा। स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान नारी शिक्षा के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कदम उठाये गये। सन् 1947 तक भारत में स्त्री शिक्षा की संस्थाएँ 28196 थीं और पढ़ने वाली बालिकाओं की संख्या 42,97,785 थी। इस प्रकार स्त्रियों की शिक्षा में काफी सुधार किये गये तथा उनहें समानता का अधिकार प्रदान करते हुए पुरूषों के समान शिक्षा प्रदान करने का अधिकार प्राप्त हुआ। स्त्रियों को ललित कलाओं की शिक्षा भी दी जाने लगी थी। इस समय कला शिक्षा के

लिये कोई शिक्षा संस्थान नहीं थे। स्त्रियाँ सामान्य शिक्षा संस्थानों में कला को सामान्य विषय के रूप में पढ़ती थी। परन्तु जैसे–जैसे समय में परिवर्तन आया कला के विभिनन शिक्षा संस्थानों की स्थापना की जाले लगी। अब स्त्रियों को कला शिक्षा के लिये नवीन मार्ग मिलने प्रारम्भ हो गये। भारत में महिलायें कला शिक्षा प्राप्त कर अपनी एक अलग पहचान बनाने के लिये आगे आने लगी। भारत में महिला कलाकारों के विषय में अगर बात की जाये तो इसका प्रस्फुटन लोक कला के साथ ही प्रारम्भ हो जाता है। लोक कला को केवल महिलाओं की कला माना जाता है, क्योंकि लोककला का सम्बन्ध संस्कारों, उत्सवों, अनुष्ठानों आदि से होता है तथा महिलाएँ इन संस्कार अनुष्ठानों व उत्सवों को श्रद्धापूर्वक करते हुए लोक चित्रों का निर्माण करती है।

आधुनिक युग में महिला कलाकारों ने न केवल स्त्रियों को नयी पहचान दिलायी है अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उनके अधिकारों को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका भी अदा की है। आधुनिक युग में महिलाओं की कला के क्षेत्र में भीदारी काफी प्रभावशाली ढंग से बढ़ी है। प्रारम्भ में केवल कुछ ही महिला कलाकारों को जाना जाता था। इनमें पारा एवं स्वर्ण कुमारी का नाम प्रमुख है। इन दोनों कलाकारों ने न केवल अपने को अपितु सम्पूर्ण नारी जाति को सम्मान दिलाया। आज तक नारी को घर की चार दीवारी के अन्दर काम करने की मशीन समझा जाता था उन्हें कोई जाने या उनसे कोई परिचित हो ऐसा दूर–दूर तक नहीं था। परन्तु धीरे–धीरे कला के माध्यम से महिलाओं ने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना प्रारम्भ कर दिया। यह एक ऐसी लहर थी जो एक बार उठी तो रूकने का नाम नहीं लिया। ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के श्री सिंगोर कान्स्टाब्टिनों आगस्तनों ने सन् 1822 में बम्बई में ''स्कूल ऑफ आर्ट फॉर लेडीज'' के नाम से ब्रिटिश महिलाओं के लिये एक स्कूल आरम्भ किया। इस स्कूल में भारतीय महिलाओं के लिये दरवाजे बन्द थे। ब्रिटिश शासन काल में ही कलकत्ता में सन् 1879 में युवा महिला कलाकारों की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें रवीन्द्रनाथ टैगोर की भतीजी गृहणी सुनयना देवी को लोक कला के लिये सेलीब्रेटी स्टेटस दिया गया। उस समय भी ऐसी कई महिला चित्रकार हुईं जिनकी कलाकृति एवं चित्रण कार्य ने उन्हें राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष पहचान दिलाई। प्रतिमा टैगोर, लीला मेहता, सविका टैगोर, सुशीला व सुकुमारी देवी आदि ऐसी ही महिला चित्रकार है। धीरे–धीरे भारत में कला स्कूलों की स्थापना ने महिला चित्रकारों को कला के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा दिखाने के सुअवसर प्रदान किये।

संदर्भ ग्रन्थ

1. पाण्डेय, डॉ0 अनुराधा. (2010). महिला सशक्तिकरण. इशिका पब्लिशिंग हाउसः जयपुर. प्रथम संस्करण. पृष्ठ **40.**
2. डॉ0 राजकुमार. नारी शोषण (समस्याऐं एवं समाधान). पृष्ठ **186.**

3. सिंह, मीनाक्षी निशान्त. (2006). महिला सशक्तिकरण का सच. ओमेगा पब्लिकेशन्सः नई दिल्ली. पृष्ठ **86.**
4. शर्मा, अनुराग. (2010). भारतीय समाज. इंशिका पब्लिशिंग हापुडः जयपुर. पृष्ठ **179.**
5. रावत, ज्ञानेन्द्र. (2006). औरत एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. विश्व भारती पब्लिकेशन्सः नई दिल्ली. पृष्ठ **25.**
6. राधा कुमार (रमा शंकर सिंह, दिव्य दृष्टि). (2009). स्त्री संघर्ष का इतिहास. वाणी प्रकाशनः दिल्ली. पृष्ठ **173.**
7. गुप्ता, रमणिका. (2006). स्त्री विमर्श कलम और कुदाल के बहाने. शिल्यान प्रकाशनः दिल्ली. पृष्ठ **15.**
8. (2003). कला दीर्घा. अंक–7. वर्श–4. अक्टूबर. पृष्ठ **13.**